Digitized by eGangotri

RANBIR LIBRARY
No. 3048
JAMMOO

भजनमाला

بھجن مالا

बाबू राज कुमार देव नन्दन सिंह कृत

जिसमें

अजा विनाशिनि शर्व्वार्धाङ्ग निवासिनि सृष्ट्युत्पत्ति स्थिति
लयकारिणि श्री राजराजेश्वरी आद्या महारानी का जगदानन्दद
चरित्र और श्री पार्वत्यङ्गजा दुर्गा भगवती का सप्तशत्यन्त-
र्गत सगुण निर्गुण चरित्र सुन्दर भजन और रागों में श्रीयोग
मायानुरागियों के आनन्द निमित्त वर्णित हैं

वही प्रथमबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

फेब्रुअरी सन् १८८१ ईसवी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

संक्षेप दुर्गा यानी एक अध्याय का अर्थ एक श्लोक में किया गया है॥

अ॰१ भानोर्वंशे प्रमासीत्सुरथ इव सुरथः सानुभावेन यस्या दैवं कार्य्यं विधातुं यदि भवति समा विष्कला सापि नित्या विख्यातोत्पत्तिरेषा जगति जलमये बोधनार्थाय शौरेर्हन्तुं करोंऽङ्गवो यां विधिरनिशमतो नात्र कल्प्यते सैव दुर्गा॥१॥

अ॰२ दृष्ट्वा सैन्यं स्वकीयं विजितमथ हतं च्चाधिपत्यं सुराणां गत्वा देवेश्वरौ प्राग्निजचरितमिदं दानवैर्निर्जितास्ते। व्याजन्नु श्चैतयोर्निःसृतमथ सुरहत्तेज आसीत्त्वरेषा भूत्वा नारी तदा तत्त्वरितमसुराणाश्रित्य याधानि भूयः२

अ॰३ सेनानीश्चिक्षुरोसौ विनिहतमखिलं सैन्यमेतन्मदीयं कृत्वा लोकार्थं देवी निशितशरनिपातैः समाच्छादयत्ताम्। क्षिप्त्वा सापि घुणास्वेतदपि तमवधीद्देवमेवासुरेशः आकर्ण्यैतद्वधं चागतइह महिषे घोणयानीतिदेव्या॥३॥

अ॰४ तस्मिन्नत्युग्रवीर्य्ये निधनमुपगते भूरि भीतिं ददाने। तां देवी तुष्टुवुस्ते निखिलसुरगणा हर्षिताः पूर्णकामाः येभ्योऽभीष्टं च दत्वा वरमतुलमहो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पूजिता याच भूयस्तस्या श्चोग्र प्रभावं कथमपि सकलं प्रागदत्स्तोतुकामान् ॥४॥

श्रो० ५ शुम्भश्चैवन्नि शुम्भस्सुरपतिमथ जित्वा तथान्यान् दलीशः। आजन्हे यज्ञ भाक्त्वं सकलमधि कृतं यत्पुरासीत्समन्तात्। स्तुत्वा देवा वरं स्वं नरपति निकटे तुष्टुवु र्विष्णु मायाम्। चण्डो दूतश्च यस्यास्सदसि दनुजराजस्य कामञ्च चक्षे ॥५॥

श्रो० ६ दूतः कोपेन देव्यास्तदुदित वचनं दानवेन्द्राय सम्यक्। आचख्यौ शीघ्रमेतत्प्रकुपित दितिजे प्रास्त दातं जगाद। केशाना कृष्यता मानयस इति तदाकृष्य मानं तदुक्तिं। हूंकारेणैव चान्यं त्रिभुवनजननी भस्मसात्तच्चकार ॥६॥

श्रो० ७ आत्तश्री चण्ड मुण्डौ विहसित वदनां सिंहसंस्थांच दृष्ट्वा आदातुं प्रोद्यतौ चेद हह सपदि कोपेन भीमा विरूपा। काली भूता कराला त्रिभुवन जयिनी संवधे नैतयोस्सा। चामुण्डे तीह लोके पुनरपिच तदाना मतस्या बभूव ॥७॥

श्रो० ८ छिन्ने सैन्ये समस्ते निधनमुपगते चण्डमुण्डे सुरेशः आहूया शेष दैत्यान्समदि शादथ युद्धाय जातास्तदाते। देवानां शक्तयस्तद्द्विविध सकलरूप तथा प्राप्य भूयाम। दैत्यानां रक्तबिन्दून्यदनुज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

समहानसमाजन्धुरेता: ॥८॥
श्लो०९ तन्माहात्म्यञ्च देव्या विदितभुवनिपालो सु-
हृः श्रोतुमैच्छत् विछिन्नेरक्तबीजे महदतकुपित:
शुंभएवन्तिशुंभ: आयातोहन्तुमेनां सम भवदति
युद्धं तयोर्भीमकारं। क्रुद्धाऽतीवाऽम्बिका सा हृदि-
त्तिजगद्द्या सम्विदार्य्याऽवधीत्तं ॥९॥
श्लो०१० भ्राता प्राणोपवरो मेहत इति नितरां किं
त्वयानैव युक्तं किं त्वं न्यासाम्बले नातिप्राथवलम
वाप्या ह्ययुद्धेयुनक्ती इत्युक्ते चैव शुंभे त्रिभुवनजननी
दर्शयित्वा स्वतन्वामेकत्रीभूय संस्था ह्यथ च तम-
वधीदेकताभाप्य देवी ॥ १० ॥
श्लो०११ देव्यां दैत्येशपूज्ये हननमुपगते तुष्टुवु:
सर्वदेवा:। येभ्यो दत्तं वरं तत्सकलसुखकरं वां-
छितार्थं ददानम्। दुर्गां स्तुत्वा न नास्तेनिहतरिपु
गणा: सृष्टि रक्षादि कारीम्। कालीं कात्यायनीं
तामवनिसलिलरूपाञ्च नारायणीम्वै ॥ ११॥
श्लो०१२ स्तोत्रेणानेन नित्यं किल विमलमना-
स्तौति यो मातु पन्ता। नो दारिद्र्यं कदाचिद्भयमपि
न्त्यपत्तोदधुयुतो वान्य केन। तन्माहात्म्यं मदीयं क-
थमपि पठतस्तस्य नैवास्ति किंचित्। देवी वाक्यंच
सर्वंत दिति विनयते सर्व्वलोकेषु शापूर्वत ॥१२॥

अ॰ २३ देवी माहात्म्य मेतत्सकलम भिहितं राज
बोधाय सम्यक्। दत्वा भीष्टं तत स्ता वरमखिल मि-
दं वैश्य वर्य्यस्य राज्ञः। एवं तस्यापि तत्र हत वर सुरथ
महीपाल कस्यापि नूनं। भक्त्या ताभ्यांच देवी किल
सम भवदन्तर्हितास्तूयमाना ॥ २३ ॥

संक्षेप दुर्गा पूर्ण हुई

श्रीगणेशायनमः

अथ भजनमाला

श्लोक

नत्वा देवीं दशविधां गणेशार्कं हरिं शिवम्। लो
कानां भुक्ति मुक्त्यर्थं क्रियते गीत मालिकाम ॥ १ ॥
ब्रह्मराज कुलोद्भूता देवनन्दन संज्ञकः वासः शिव
हराख्येच सत्कुले कुलदीपकः ॥ २ ॥ सीता यत्र स-
मुद्भूता तीरभुक्त देश पावनः तत्र राज्यश्च ग्रामंच ।
बागवती यत्र विश्रुता ॥ ३ ॥ बागवत्या पूर्व दिग्भागे
कोशैके च मनोहरे शिवेन निर्मिता चैषा सुन्दरी
चाति सुन्दरी ॥ ४ ॥ कृत्वाच पुरनिर्माणं शिवो पूर्वदि-
ग्भागतः देवकुल्या निवासोभूद् तो शिवहरः स्मृतः ॥ ५ ॥

दोहा

ब्रह्म राज कुल भूत तन देवनंदन मम नाम।
पावन मिथिला देश महं स्थित शिवहर ग्राम ॥ १ ॥

Digitized by eGangotri

प्रान्त लोग के हर्ष हित रचौं गीत की माल ॥ १ ॥
लीला श्री भाषान्ति करसुनलहै अघजाल ॥ २ ॥

कवित्त

वन्दो श्री काली पद कमलोंते अधिके लालेजा कोज-
ग प्रान्त लोग देवी रूप ध्याये हैं। कहत गणेश गा-
णपत्य अरु शैव सदाशंकर अविनाशी सुखराशी
कहिगाये हैं। जाको ध्यान विष्णु करि ध्यावत कुरवै-
ष्णव लहि दुर्ल्लभ सुख जाको ब्रह्मादिक सिहाये
हैं। कहत सौर सूर्य्य जाहि देव सुवन वेद जाको
पांच तन एक पंच देव ठहराये हैं ॥ १ ॥

छप्पै

पंच देवता ध्याय बहुरि इन के जो जन हैं निज निज
रूप न्हि चरण कंज जाके अलि मन हैं सब कहँ क-
रौं प्रणाम जासु अनुकंपा पाई लहि काली पद भ
क्ति जाहि सेवत सुख छाई पुत्र पौत्र यश विभव
जत जासु कृपा निज गृह भरौं तासु चरित शुत अष्ट
पद विरचि गीति माला करौं ॥ १ ॥

अथ भजन

राग भैरोताल जल्द तेताला

जैजै काली कल्याणी तूं कमलासन सेवित माया
अलय अखिल ब्रह्माण्ड लोक सुपल जौनउपजाया १ टे॰

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जबजब गाइ धस्यो बसुधाको दुख असुभर पाया
गायसन्तसुर आरतबानीतुमकोटेरि सुनाया ॥ २ ॥
तबतब बपु अनेक धारण करिहतिकै दनुजनिकाया
सुखी करत सुरसाधु बिप्र महिबिमल सुयश जग
छाया ॥ ३ ॥ एक बार बिनुजल महि ऊपर अतिहि
दुकाल सताया चाहि प्राब्द सुरटेरि सुनायो तुरत-
हि कीन्ह सहाया ॥ ४ ॥ शाक रूप होइ प्रगट भई
जग स्वाद अमीरस पाया देव सुवन सत सम्वत लौं त-
व शाकंभरी कहाया ॥ ५ ॥

१ राग काफ़ी ताल तेताला

सकल पदारथ पायो तव ते सुत बित नारि राज सुर
जन प्रभु बिबिध भाँति सुख छायो ॥ १ ॥ ज्ञान
मान बिद्या कविताई पद के बोध लखायो अन्तर
बाहिर हनन कलि कल्मष दुख के पुंजन धायो ॥ २ ॥
जब ते शरण गत काली के जानि अभै पद आयो दे
व सुवन काली प्रसाद तें अति आनन्द अघायो ॥ ३ ॥

२ राग झंझौटी ताल तेताला जल्द

तु अंघर के मैं सदा दास हूं पौ जन्म फल पायमा
तजू १ असित नौमि तुल मास अहै तिथि कर्क
लगन बुधबार जीव नखत अरु तनु पति प्राप्ति हैं
तन के सुख दातार मानजू २ पंचम गुरु निसोंदन पति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हैं मङ्गल बुधके साथ योग सुसिद्धि दूसरे कबिहैं
बहु धन सुख देहैं हाथ माथ जू ३ अष्टम राहु मित्र
ग्रह सहशनि दोष करन नहिं येहैं तव पद कमल
प्रसाद शंभु प्रिय सब सुन्दर सुख हैहैं मात जू ४।
अति हर्ष बिचार करत शुभ गुण सो सुनन्दन फ-
लपाय चिरंजीव शिशु रहे बिभवयुत सबजनको सुख
दाय मातजू॥५॥

३ राग भैरवी ताल तेताला

जय जय जगदंब अम्ब सेवत सुर मुनि कदम्ब पा-
वत मन काम नाम लेत कालिका १ तारा पद भ-
जत जेहु भव को तरिजात तेहु बन्दौं छिन्नमस्ता
पद शत्रु घालिका २ कमला को ध्यान धरत दा-
रिद को खानि हरत भरत भुवनेशी भवप्राणत पा-
लिका ३ बगला पद प्रीति करत दुष्टन बल बुद्धि
हरत धूमावति अरि उचाटि असुर बालिका ४
मातङ्गी को चरण ध्याय मूरुष मति बिमल पाय
त्रिपुर सुन्दरि कहत जाय अघ निकालिका ५
भैरवी भयहरण मात देव सुवन शरण जात बिमु-
खन को करहु घात हित दयालिका॥६॥

४ राग सोहनी ताल जत

कालीनाम भजो मन मूरुष क्यों आशा नरको करता

Digitized by eGangotri

सब सुख भवनि हरनि दारिद दुख अस पद तजि क्यों
जग रहता १ वेद पुराण शास्त्र बहु पढ़ि पढ़ि तीरथ
करि करि श्रम मरता नाहक सकल ब्रह्म विद
भाषत जो काली पद मन जरता २ करि सत
संग भजो काली पद क्यों त्रयतापहिं परिजरता
कामधेनु चिन्तामणि सुरतरु काली सम न बि-
भवधरता ३ इन्ह सब के जब निकट जात नर
तब मांगे सब फल फरता बिन मांगे सबहीं चा-
रों फल कालि कृपा जन पूरभरता ४ दानि ठक
और नहिं दूसर कोउ काली तजि लखि परता सु-
रनन्दन अस समुझि देव मुनि काली पद तजि
नहिं टरता ॥ ५ ॥

५ राग काफी ताल जल्द तेताला

आनन्दी के भजन बिना नर नाहक जन्म गंवा-
यो रे आनन्दी के भजन करत प्रिय अविनाशी
पद पायो रे १ आनन्दी आनन्द दायिनी वेद बि-
मल यश गायो रे सो तजि मूढ़ फिरत क्यों घर घर
फिर दुख भार चढ़ायो रे २ करि विश्वास भजो
आनन्दी जो गुरु ध्यान लखायो रे सहजहिं मिटै स-
कल दुख तेरो लहि सुख विभव अघायो रे ३
अष्ट सिद्धि नवनिधि चारि फल आनन्दी कर ल्यायो रे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सानिजभक्तन्ह भवन भोतहै देव मुकुन्द गुनिगायोरे ॥

६ रागपीलू ताल तेताला

भजिलेनर अज्ञानी सदा दुर्गा वरदानि आदिसोप्र कृतिसब भुवन ख्यातयस नाम हरत अघ अवगुण खानि १ जोनर भक्ति सहित नित्य पूजत शारद का लवार्षिक अनुमानि सकल कामना सोजन पा वत साम वेद गुण विपुल वखानि-भ·२ यह भव जलधि पारजो चाहत सोउ सेवत कमलानी ना रद शारद हरि चतुरानन सिद्धि लहे सेवत प्रिय रा नी·भ·३ पुत्र पौत्र धन बढ़ि निअवा जगदम्बा जि यजानी प्रेम सहितमुकुन्द सेवत लेत अमर पद सुखजइ प्रानी-भ·४

७ रागपीलू ताल तेताला

आनन्दी के भजन करो नर क्यों भ्रम संग लपटायोरे अम्बा को शरणागत देवी अरूब भ फन्द कटा-योरे १ रहो सदा आनन्द मगन में जोह नाम हि सदा योरे जासु प्रभाव ज्ञान उर उपजे अघ के ओघ खटा योरे २ याद करो जब गर्भ वास में सुधा लैका मुलटा योरे तहं को रदच पठायो तेरो अवकस नाहि रटा योरे ३ आनन्दी पद छिनक न बिसरो रहो भ्रम सपटा योरे देव मुकुन्द सुरपति पद पायो स्वामा न

Digitized by eGangotri

जगनजतो धोरे ॥ ७ ॥

८ रागवारो छ्हीताल धीमा तेताला ॥

जै बाराही ब्रह्मवादिनी वागेश्वरि हरि माया श्री भ
वानि भय को हरनि भीमा रिपु चामाकरनि जन हि-
त भवजलधि तरनि केवल शंभु जाया १ लक्ष्मी
अरु उमा नाम ललिता कहि आठो धाम चारो फल
निज भक्त धाम करत अमल काया २ काली जग
पाली खल घाली रिपुहाली मातु पातु सब ठांई
देवभुवन शरण आया ॥ ३ ॥

९ राग झामोटी ताल झपताला

कोटिन अपराध मेरे क्षमा करो जगत मातु जान-
मा भवानी तुही दयावन्त कृपावन्त माया बन्त
सदा करुणा करि जानो निज दास मूदयानी १
जेते जग जीव जाल उपजत तुव अंग माल तेरोई
प्रसाद यश गावत वाक बानी २ देव भुवन दास
तेरो करुणा दृग कोर हेरो जानो निज चेरो मातु शं
करी मृदानी ॥ ३ ॥

१० रागईमन तालतेताला

भनु मन काली सब सुखदानी शुंभ निशुंभ हन
न केवीरियां दुर्गा भालमांहिं प्रगटानी १ तेज प्र-
ताप कहां लगि कहिये यश गावत श्रुति बानी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

दुर्गा सरिस प्रभाव सकल जग बुध विधि बिबुध
बखानी २ काली रूप सबल जग जानहु कुमार-
मा प्रलानी सुरनन्दन को देहु भक्ति निज जन जा-
निये महरानी ॥३॥

११ राग सोहनी ताल आड़ा तेताला

बरनौं प्रकृति स्वरूप भवानी सृष्टि प्रकाश जलहिते
जाई प्रकृति नाम ताते श्रुति गाई त्रिगुण भई तन
तीनि बनाये बिधि हरि हर होये जग ठहराये परमा
त्मा रूप जग जानी जिन्ह के वाम अंग ठकुरानी १
शक्ति माहिं दाहक गुण जैसे पुरुष माहिं प्रकृति रह
तैसे ताते एकी ब्रह्म मय देखैं थिर जंगम सब करि
अवरेखैं करौं सृष्टि जब मन निज आनी एकै पंच
रूप प्रगटानी २ भक्ति मुक्ति अरु मुक्तिहि देनी
परमधाम को नाम निसेनी सब जग ख्यात प्रभूत जा-
हि के जो बरनौं गुण बिभव ताहि के देव सुवन को
निज जन जानी देहु भक्ति निज पद शिवरानी ॥३॥

१२ राग बिहाग ताल तेताला

शुभ मतो यह भाई साई काहू ठहरसाई १ जैसे
मेंहदी पात में लाली रंग न देत देखाई बिनु रगरे
लाली नहिं पावै को टिक करै उपाई २ पत्थर माहिं
अनल के वासा चकमक सेवै लहराई करि बिचार

Digitized by eGangotri

निज मन में देखो सांचो भाव समाई ३ बिन काली पद प्रीति किये नर तन की तपनि नजाई देवसुवन सनकादि अभय पद पायो भक्ति सहाई ॥४॥

१३ राग विहाग ताल झप ताला

जयति जयति जगत जननि पंचदेव रूपा वैष्णव जन विष्णु बदल सेवत फल चारि लहत कहत श्रुति नेति नेति जासु गुण अनूपा १ सौर कहत सूर्य्य देव देवन पति गति अभेव सेवत पद कमल जासु मेटत भवधूप शंकर करि शैव सदा सेवत सब सम्पदा लेत मन मान तरत जगत जाल कूपा २ शाक्त जन शक्ति ध्याय अर्थ धर्म काम पाय रहत संतत मन अघाय अन्त मुक्ति रूपा देवसुवन करत ध्यान गणपति गणेश मान जाके नाम भय विशाल रहत विघ्न लूपा ॥३॥

१४ राग ईमन ध्रुपद ताल चौताला

कालिका पद लाल लाल करतल युग लाल लाल छुटें ध्याये जगत जाल गले शोभै हीरा लाल हृदय बीच मुंडमाल भाल लाल चंद्रिका के किरण लाल १ कर पद नख बिमल लाल मुद्रि कन्ह की जोति लाल पायल द्युति लाल कहै सुर सुवन देरि जो नर इन छबि को हेरि ताको नु करत निहाल सदा काली सुजन पाल २

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

१५ राग बिहागड़ा ताल एक ताला

जयति जयति जगत जननि कालिका भवानी धर-
णि भार हरण हेत प्रगटे ब्रजपति निकेत कृष्ण रूप
अति अनूप तीनि लोक जानी १ जब जब जग असुर
भरत काली तब बिबिधि धरत हरत भूमि भार थातु
धान मान भानी २ सोइ सुचरित जगत गाये अध
मो गति विमल पाये तीनि ताप छूट जाय श्रवण प-
रत प्राणी ३ देव मुवन हर्ष पूर्ण सेवत पद कमल धूरी
दीन्हो सुख भूरि मातु सेवक प्रियु जानी ॥४॥

१६ राग प्रबन्ध ताल सुर फाकता ॥

जय जय श्री मंगल चंडि को प्रकृति वदनते प्रगट भ-
ई तब कलि कलमष हिं बिखंडी को १ सृष्टि माह
मंगल तब हेरी क्रोध रूप जगलय के बैरी ताते मंगल
चरित नाम भो जन यम त्रास बिहंडी को २ जग म-
ब तिय मंगल दिन जानी पूजहिं तुमहिं काय मन
बानी पुत्र पौत्र धन बिभव लहत नर सुरनन्दन सुख
मंडी को ॥३॥

१७ राग भैरवी सिन्ध ताल तेताला

मेरो मन काली कल न बिसारो काली कमलापति पद
देनी अघ हरणि कैलाश निसेनी जो जन काली प्रारण
निहारो ताको काली करत सुखारो १ तारा भव समुद्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तें तारैं छिनमस्ता अरि वृन्द संहारैं कमला जन घर
विभव भरतु हैं भुवनेश्वरि सुख देत अपारो २ बग-
ला अरि अस्तंभनकारिणि भैरवि भक्त जनन्ह भय
हारिणि धूम्रावति रिपु गण उच्चाटदै मातङ्गी अघ जा-
ल बिदारो ३ त्रिपुर सुन्दरी चरण मनाय तीनि का-
ल के ताप न पाये जो मा दरपद हृदय धरत जन ल-
हत कवित गति भक्ति सुखसारो ४ यह दश विद्या
नाम उदारो जो नर हृदय कमल में धारो ताको यम
के त्रास छूटि गये सुरनन्दन श्रुति टेरि पुकारो ॥५॥

१८ राग पूरवी रेखता ताल तेताला

भजन करु कालि पद चौरवे भूलो मति मूढ़ नर
बौरे १ जगत के सकल सुख झूंठे कबहुं नहिं जा-
हिंगे जौरे २ सदा मन ध्यान में राखो फिरो मति मो-
ह फन्दौरे ३ कहै सुरसुवन दुख तेरे हरैंगे कालिका तोरे ४

१९ राग बिलावल ताल एकताला

जपि जपि यति योगी वृन्द बिहरत तजि कोटि फंद
जागि जागि यामिनि जुर जाप सु नाम काली १ पावत
वर भुक्ति मुक्ति आवत नहिं फल बिमुक्ति वन्दित पद
देवन ते विविध भाग्य भाली २ बरणत मुनि बरदि-
नेश शारदा सुरेश शेष के श औ गणेश जाहि गु-
ण गण यश जाली ३ ताके पद कंज बीच बिलसत

Digitized by eGangotri

नित बिनय युक्त देवसुवन चित चाहि चंचरीक प्राली ४

२० राग भैरवी सिन्ध ताल तेताला

करु रे मन मधुप सवेरा कालीपद कंज मेंडेरा १ बार
बार सम श्रावन मानो निशि दिन करहु बसेरा २ शि-
व सनकादि आदि सुर सेवत पावत सिद्धि घनेरा ३
उत्तर कौन करोगे पांवर करिहैं जब यम घेरा ४ देवसु-
वन बरवच प्रमाण सुनु इन्द्रिन देहु तेरा ॥ ५ ॥

२१ राग खंमाच ताल झुमरा

श्री रुद्राणी ब्रह्माणी तू भुवनेश्वरी जै जै श्यामा तू मा-
तङ्गी बाराही तू धूमावति गुण धामा १ बगलामुखी
लक्षि छिन्नमस्ता दुर्गा तारा नामा काली कालिक
लमय कोनापानि त्रिपुर सुन्दरी भामा २ दश विद्या
के नाम लेत नर लहत तुरत विश्रामा देवसुवन आ-
नन्द मगन मन गावत गुण अनुपामा ॥ ३ ॥

२२ राग देश ताल रूपक

भजु मन कालिका शुभदानि कंज लोचन ताप मोच-
न भक्त वत्सल बानि १ जासु गुण कर श्रवण अ-
नुछन करत अघ को हानि नाम बारक कहत प्रि-
य सो होत मंगल खानि २ भूमि जब जब भार पाये
देव द्विज दुख जानि विविध तनु धरि मारि दुष्टनि रा-
खनी श्रुति कानि ३ होत सुर धुर योग नर सम ध्यान हूँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हियमें आनि देवसुत नव शरण आय ह्वै बहु शिव
कीरानि ॥४॥

२३ राग झंझोटी ताल धीमा तेताला

जय जय जगजननि दयानी जब जब गाढ़ परे सन्ती
न पर तब तब धरी तन अमित भवानी १
मत्सरूप धूमावति जानो बगला मुखी कूर्म शु
त्तिजानी शूकर रूप धरे मातङ्गी छिन मस्ता
नरसिंह बखानी २ त्रिपुर सुन्दरी परसराम है
सहस्रार्जुन दलमानी भुवनेश्वरी वामन तन की
न्हो लक्ष्मी बौद्ध रूप अनुमानी ३ दुर्गा कल्की
राम तन तारा भैरवी हलधर आनी पूरन ब्रह्म
कृष्ण काली कहि देवसुवन शुभमंगलदानी ॥४॥

२४ राग ईमन ध्रुपद ताल चौताला

शारद प्रसाद होत बुद्धि विद्या विनय ज्ञान ध्यान
अक्षर शुद्ध बानी उक्ति युक्ति मंथत स्वर राग ता
ल तान श्रुति ठराने सुरनि नाद रस सानी १ शुद्ध
शालंक संकीरन शुद्ध बिकृत नयन बिरस अस्था
ई सचाई हौं कछु न जानी २ होय के सुबुद्धि भेदस
बकोल खाय सदय दीजे शुभ सुवन थाये तोहि वाक बानी ३

२५ राग लौम झा झोटी ताल एकताला

जगत जलधि तरन तरनि भक्ति जाके वेद बखानि

Digitized by eGangotri

कारण धार नाम रजु प्रेम ओर नाको १ रवैचन वार
ध्यान तोर संमुख वायु छाया कोर जगत अर्नानि
ऐसो नजि जाउ धारण काको २ सप्त द्वीप नव कुं
खंड रह्यो फैल यश अखंड शंभु प्रोग रटत
सदा सुख अपायाको ३ निद्धि नव सिद्धि अ-
ष्ट पाये देवसुवन अति अधाय सकल लोक
पूज्य पद विपायो दिन थाको ॥४॥

२६ राग काफ़ी ताल तेताला

पद पवित्र काली को सेवत पाय पदारथ पाप्त
भलेहो अगम अपार अभार जगत सुख सगा
भंगुर लखि परत पलेहो १ होत भक्ति श्री का
लीके जाबस अणिमादिक सुखलेहो शिव ब्र-
ह्मा सनकादिक नारद प्रोग अथोक्षित रहि कु-
थलेहो २ अविगति की गति लखि न सके कोइ
तातेनरजड़ जातहलेहो देवसुवन सतसंग करे
जबतब यह महिमा लखि अचलेहो ॥३॥

२७ राग देप्रा ताल धीमा तेताला

हे काली करुणामय अम्बा जगदम्बा मम अर्ज
सुनोजू मति हमार तव गुण अधार करि रहै सदा
दिन रैन तुनोजू १ गुरु काली विज्ञान कालि अरु
ध्यान कालिका हृदय गुणोजू योग कालि अरु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर्मकालि सुख भोग कालि यशुविमल चुनोजू
युक्ति कालि अरु मुक्ति कालि काहि नाम कालि
अघपुंज धनोजू कालि गान काली मान काली
सुखुवन प्रथा कालीजपिजावो दुख पावो न पुनोजू ॥३॥

२८ रागसोहनी ताल धीमा तेताला ॥

देखो हो रे अद्भुत आनन्द छाय रह्यो रे कतहुं नृत्य
कहुं गावत गुनिजन कहुं याचक धन पाइ रह्यो रे १
कहुं द्विजगण नाना होम करतु हैं महँ महँ महँ महँ
होत महा रे कहुं बलि होत चलत असि छप छप
श्रोणित सरि सम जात बह्यो रे २ कहुं कहुं फिरत
भक्त मन उमगे जै जै जै धुनि टेरि रह्यो रे देवसुवन या
औसेहि अवसर भक्ति सकल सुख खानि रह्यो रे ॥३॥

२९ होरी राग बहार ताल जत

काली जू खेलत होरी भुवनेशी बगला धूमावति
मातङ्गी संग जोरी उमा रमा तारा सावित्री सचीस
हित सुर गोरि सकल मिलि भईं एक ओरी १ एक
वर शंभु सकल सुर सुरपति विष्णु विरंचि लयोरी
खेलन रंग विविध उपजावत सो छवि कहि न परोरि
भक्त सुख खेलत होरी २ बाजत चंग मृदंग बांसुरी
झाल झांझ डफ कोरी उड़त अबीर लाल बादल
भा कछु नाहिं जात लखोरी लाल चहुं ओर भयोरी ३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देवभुवन सामा होरी के घोष हुं कहि न सको री
मैं केहि भाँति एक रसना तें ताको बरनि निहोरी
भक्ति वर माँगि लयो री ॥ ५ ॥

२० होरी राग सिंदूरा ताल जत

कालीजू के दरबार होरी धूम मची उड़त गुलाल
अबीर कुंकुमा के पूर भरि पिचकार १ बाजत ता-
ल मृदंग चंग बहु मुरली बीणा सितार धरि धरि देह
राग रागिणी युत जुरे तान श्रुति चारि २ रंभा अरु
तिलोत्तमा उरबसी जुरे सहित शृंगार ये सब नाक
नटी तहं नाचत लावत भाव अपार ३ जो सुख को
तरसत ब्रह्मादिक सो सुख को बहि धार देवभुवन
तेहि अवसर पाये लहै भक्ति निधि सार ॥ ४ ॥

२१ राग बहार ताल जत

नयना लागि रह्यो मा दरशन के नव पाय खोजत खो-
जत उमरि बीति गो तीरथ तीरथ जाये १ व्रत पूजा
उपवास विविध विधि करि करि श्रमन अघाय रजक
श्वान से डोलत घर घर कबहुं नहीं सचु पाये २ जब
सत्संग संग मन लाग्यो नाम नेह विरमाये देवभुव
न सहज ही उर अंतर दरश दियो जगमाये ॥ ३ ॥

२२ राग बहार ताल जत

काली मंदिर के द्वार के पार रंग भेर बाजत ताल मृदंग

Digitized by eGangotri

٢١٧٥ بجن

झांझ डफ़ अरु मंजीर सितार होरी अकथ कोर १
उड़त अबीर लाल चहुं दिशि भय सूझत वार न पार
होत कुलाहल भारी आंगन में कौतुक देखन वार
होरी लखत खरे खरे नाना भांति सुगन्ध चलत हैं
खान पान बहु वार देव सुवन तहां मांगि लियो अ
कालि भक्ति सुखसार जाहि निति अमर अरे ३

३३ रागकाफ़ीतालजंत

काली रचि रूप बनाई मुंड माल गल अवरानि
कुंडल झलकानि केशरसाई मनहु नील गिरि
शिखर भानु लखि काजावलि छवि छाई स
ढा वरणि नहिं जाई १ भाल अर्ध बर तिलक
निशाकर मुकुट शिर पहिराई मनहु राहु भय
भाजि भजत विधु चरण शरण पहं आई तिन्है
शिर लीन्ह चढ़ाई २ साज सजी सब योगिनि
गणमिलि सब मंगल गुणगाई केशर अबिर रं
ग भरि भरकर लै पिचुकी छहराई जलद जनु
झूमि झरि लाई ३ बाजत बीन लीन सुर स्टदुधु
नि मिरदंगनि समताई देव सुवन सुनि दरस हेतु
सब देव देविन नभ छाई सुमन हरषित बरषाई ॥४॥

३४ राग होरी काफ़ी ताल जत॥

होरी रंग रची जग तारा नु तार निहारी त्रिपुरा आदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आनि सब सखि मिली बन्दनी समर लली नाचैं संग मची १ अणिमादिक सब सिद्धि सराहत क मला करैं सुरमानगावै ताल जची २ अविरमयी सुरनदी प्रवाह मुनि ललना मनो पुनि काल मंजे कीचमची देव सुवन जाकी नाम तारिणी रटै रुचिराणी सोहै सोक बची ॥४॥

३५ राग बिहाग ताल आड़ा तेताला

जयजय बचन देवता बानी प्रणत सुमति दा सु खद सिद्धि दा नारायणी कीगनी १ तुम्हरे चरण कमलरज सेवत नारदादि मुनि ज्ञानी सनकादिक ब्रह्मादिक ध्यावत व्यास देव विज्ञानी २ मूक होत बाचाल मानु नवलहि पद जब प्रानी सुवन दनशारद करुणा मयी प्रकृति दूसरी जानी ॥३॥

३६ रागविहागताल आड़ा तेताला

जय जय सावित्री श्रुतिमाता छन्दो मई सर्व दुख हरणी यंत्र सुमंत्र तंत्र को दाता १ महिदेवन्हि के जाति रूपजो जप रूपा जप त्राता तपसिद्धि ब्रम्ह नेमको दायिनि विद्या जलधि बुद्धि को धाता २ विधि के चिया शील गुण पूरण ध्यान हरत अघ ब्राता देवसुवन को देहु अभय वर होइ सुयश ६ जग ख्याता ॥३॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

२७ राग माल कौस ताल एकताला

तन मन धन वारौं चरण कमल पद तेरो जेहि ध्या
वत ब्रह्मा शिव शारद शेष सकल सुर खेरो १
हे काली कमलापति माया अष्ट सिद्धि तव चेरो
नव निधि लहत विनहि श्रम जग में जो जन तव
पद हेरो २ हे जननी जन के दुख हरनी सुनिय
विनय यक मेरो देवसुवन के हरहु सकल दुख
करिके हिय में डेरो ॥३॥

२८ राग बिहागड़ा ताल झपताला

जय जय जग जननि देवि राधा सुर चरण सेवि सु-
द्धि बुद्धि वृद्धिदा त्रिलोक स्वामिनी १ सर्व श-
क्ति में प्रधान निगम करत विभव गान पावत
जन ज्ञान ध्यान अमित नामिनी २ वृंदावन वा
स करनि संतन रिपु त्राण हरनि सकल भुवन च-
रित भरनि कृष्ण कामिनी ३ कृष्ण मन मान-
स मराल कृष्ण हंस विमल ताल कृष्ण प्रीति
पाल मालि सुभग भामिनी ४ कुल सहित स
दा नाम देवसुवन अष्ट याम पावत मन काम
लेत दिवस यामिनी ॥५॥

२९ राग बिहागड़ा ताल जल्द तेताला

भजु मन राधा राधा राधा राधा नाम सकल जग सारके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कारत यम के बाधा १ आदि शक्ति दशशिराऋ-
भक्तपरवृत्त कृष्णतन आधा २ लक्ष्मी है वृष
भानुलाड़िली सबगोपियन में साधा ३ वृंदावन
के रास थली में पूज्यो नव पद कांधा मुरलन्दनको
भक्ति देहु निज अखिल अमर पद दाधा ॥ ५ ॥

४० रागविहाग ताल झपताला

जयति जयति जनक नंदिनि रामरंजनी शारदचं
द मुख असन्द ध्यान करत हरतद्वंद मेटत यम
फंद मानुनेत्र खञ्जनी १ कुण्डल शोभित क-
पोल चूड़ामणि अति अमोल कोकिलरव मधु-
र बोल सरयु मंजनी २ निरखत छवि मानु तेरि
हरषत हिय चित्त मेरि बरसात गुण रूपहेरि बुद्धि
पजनी ३ देहु मातु भक्तिदान दानीनहिं तुम
समान याचौं नहिं देव आन भक्ति रंजनी ४ देव
सुवन हर्ष सहित गावत नित तव चरित्र पावत
भक्ति धन पवित्र शत्रुगंजनी ॥ ५ ॥

४१ रागईमन ताल तेताला

हे सीते मिथिलेश लाड़िली त्रिभुवन पति रघुवर
की प्यारी वेद पुराण संत गुण गावत महिमा अग-
म अपार तिहारी १ सनकादिक ब्रह्मादिक ध्यावत
सहित शिवा नित जपत पुरारी गणपति जन पति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

धनपति दिनपति सकल पूज्य पद सदा तुम्हारी २ मति न मोहिं तव अस्तुति बनावों गावों सुनावों विनय अघहारी देवसुवन को हरहु सकल दुख देहु भक्ति निज सबसुख कारी ॥ ३ ॥

४२ राग श्याम कल्याण ताल धीमा तेताला ॥

जपो सदा काली को नाम मन को होवै काम हरसकियेते होत मन आनन्द सुख पावत गुण गावत शुभ धाम १ परसत पग अघ भाजि जात लहत मन काम आठो याम २ यह जिय जान माने शिवगुरु को याते सुरसुवन मन होत है बिश्राम ॥ ३ ॥

४३ राग ध्रुपद श्याम कल्याण ताल चौताला ॥

दुर्गा को पद सेवो जाते मिले अर्थ धर्म काम जाको प्रबल प्रताप तेज धर्म को पताको फहरात मोक्ष पद पावत लेत नाम १ कनक दण्ड चमर छत्र वैकुण्ठ ते सरस सुन्दर सुख धाम २ रतन सिंहासन पै विराजित बोलत हैं बंब्रूहि देव सुवन मंगल स्वरूपिणी शिव बाम ॥ ३ ॥

४४ राग खंभाच ताल चौताला

करौं कौन अस्तुति मातु तेरो अल्प बुद्धि मेरो तव गुण अपार सहस बदन रटत रहत निशि दिन नहिं लहत अन्त गावत नहिं मिलत पार आलि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बिस्तार १ जेते जगजीव तेरो मंत्र जपत सिद्धि करत जाको जस प्रेम ताहि देति फल बहु प्रकार २ सब को प्रति पाल करति देवसुवन दास जानि अभय करत पुरारि भनत त्रिपुरार ॥३॥

४५ राग सोहनी ताल तेताला

कुसम बरण जो काली ध्यावै ताको अनन्त दुख दूरि जात तत क्षण १ मन वच क्रम चरणाधार उर सोई होत धनधन २ ज्ञान ध्यान चौसठ विद्या कला लहत बढ़त सुयश चारु होत सुभगतन ३ देवसुवन को यह सिख मानि लेहु भक्ति गहो करि अति प्रिय मगमन ॥४॥

४६ राग काफ़ी ताल तेताला

काम क्रोध तजि पद काली को भजो जाहि ते जग निस्तार कत समुझायो समुझत नाही ऐसो मन अविचार १ एक एक जगदम्ब अम्ब दूजो अवलम्ब नाहिं वैतो अधम अघी अपार २ कहत देवसुवन तव किंकर याके तारे नाम तिहार ॥३॥

४७ राग बिहाग ताल आड़ा तेताला

मन मेरो कालिहि न बिसारो सब दिन काली कल्प कल्पान्तर करति सदा जन के प्रतिपारो १ सत युग में नरहरि शरीर धरि जन प्रहलाद उबारो

(दिरारा)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हिरणाकशिपु हति जगत बिमल यशु श्री काली बिस्तारो २ बलि छलि राज दियो सुरपति को करि बामन अवतारो त्रेता परशुराम बपु धरिके सहसार्जुन संहारो ३ तैसेहु राम चंद्र बपु धरिके हति दश मुख कुल सारो द्वापर में बलदेव रूप है दुबिद नाम कपि मारो ४ काली कृष्ण रूप धरि जग में अति लीला बिस्तारो देव सुवन सब दिन करुणामयि सज्जन कर रखवारो ॥ ५ ॥

४८ राग गौरी छन्द लावनी ताल रेखता

हे काली कश्मीर बासिनी तू का मा ख्या रानी ज्वाला मुखी जगत की जननी अघ हननी भव बानी १ ब्रह्म मई तू वाग वादिनी बाराही ब्रह्मानी तू बानी बिमला कमला सनि महिमा वेद न जानी २ तेरोहु सुमिरन तेरोहु धारन तेरोहु ध्यान भवानी देव सुवन मन है दिवस निशि देहुहे बरदानी ॥ ३ ॥

४९ राग भैरव ताल जल्द तेताला

जै काली कल्याण दायिनी श्री कमला पति माया लिंग धारिणि कार्मुकी कुमुदा बिशालाक्षि सुर जाया १ त्रिभुव कामना पूरणि ललिता गोमति गौरि जयंती रंभा कीर्ति मती त्रिपुरे पुवरि रुद्राणी खलहंत्री २ काम चारिणी भद्र कर्णी का मंद नया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भवानी मदोत्कटा पुरुहूता कुमारी कपिला बि-
मलाबानी ३ अम्बुप्रिया सन्मार्गदायिनी मुकु
टेश्वरि महामाया देवसुवन के हरहु सकल दुख
हतिके प्रातु निकाया ॥ ४ ॥

५॰ राग झांझोटी ताल झपताला

जयजय जग प्रगट करणि सज्जनजन चापहारिणि
भक्तिजननि अघहरणि बिंध्यवासिनी १ हे ब्र-
जेश नन्दिनी समस्त लोक वन्दिनी त्रिलोक
शोकहारिणि तु शत्रु नाशिनी २ सेवततव पद
सुरेश ब्रह्मा मुनिगण दिनेश पाये सब सिद्धि
हृदय यश प्रकाशिनी ३ देवसुवन बिमल पा-
प सेवहि तव पद अघाय दीजे बरदान मातु स्व-
क पाशिनी । ४

५॰ १ राग देश ताल जल्द तेताला ।

गिरितनया पद भजन करो मन सनि के कुल च-
तुराई रे जाकी कृपा पाय जल जासन खुग विधि ज-
गतु पजाई रे १ जाके शक्ति करत हरि रक्षा अंत
रुद्र बिनसाई रे जिन्ह के शक्ति पाइ नर नर पति
पावत विपुल बड़ाई रे २ जिनकी कृपा पंगु गिरि
लांघत अंधहि जग दरशाई रे देवसुवन जाके प्रसा
दते सकल काम सिधि पाई रे ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

५२ राग खंभाच ताल धीमा तेताला

बरणौं तीर्थ रूपिणी देवी नाम लेत अघ ओघ नशानी सह्याद्री पर महा लक्ष्मी माता पुर रेणुका बखानी १ तुलजा पुर प्रात पतंग तीर्थवर ज्वाला मुखी विराज भवानी चीन देश में नील सरस्वती शाकंभरि थल सब सुख दानी २ नील शैल पर नीलाम्बा थल बैद्यनाथ में बगला जानी कांची पुर में भीमा देवी मणि द्वीप भुवनेश्वरि रानी ३ मंची पुर कामाख्या कामरू योगेश्वरि एकांबरा मानी ये सब श्रेष्ठ तीर्थ सुरनन्दन दरशन मात्र करत अघ हानी ॥४॥

५३ राग बिहाग ताल आड़ा तेताला

काली मुख निरखत लज्जित चन्द जाके पद ब्रह्मादिक ध्यावत नारद सनक सनन्द १ शेष महेश गणेश आदि कवि पूजत तुमहि अखंड पावन यश नित वेद बखानत व्यापि रह्यो ब्रह्मंड २ देहु मात निज दास जानि के याचत भक्ति अभंग देव सुवन के हरहु सकल दुख भरहु सुभद सुख अंग ३

५४ राग झंझोटी ताल जल्द तेताला

रक्तबीज सों कहत भवानी सुनहु मंद मति प्रथम मोहि पै पठयो दूत अधम अघखानी १ ताहि कह्यो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मैं जाहु शुंभ ढिग कहहुं मोर परनिज्ञा बानी तीनि लोक पर रूप जाहि के कबहुं न ग्रहण करौं अभिमानी २ जो रण जीति विवाहै विधिवत होइ रहौं ताकी पटरानी देवसुवन सम अस प्रमाणा सुनु तासु दूत तुमहूं अज्ञानी ॥ ३ ॥

५५ राग झंझोटी ताल जल्द तेताला

रक्तबीज सुनि कर्कश बानी दुर्गा क्रोध भयो उर अंतर छाड़न लागु बाण अभिमानी १ छण महं तासु बाण खंडन करि जगदंबिका भक्त सुखदानी मारयो बाण असुर उर तीक्षण रथ पर मूर्छि परा अज्ञानी २ लखि धाये सब असुर सेन पुर वर्षन लाग मेघ जिमि पानी पुनि शर छाड़ि काटि अरि बाणहि निज शर मारि असुर दल भानी ३ रक्तबीज बध करि रण भीतर सुखी कियो सुर संत भवानी देवसुवन को करहु सुखी अब हरि के सकल शत्रु कल्यानी ॥ ४ ॥

५६ राग मलार ताल तेताला

श्री काली छबि निरखि हरष युत निशि दिन तरसत नयन हमारे योगी ब्रह्म सबै नहिं ध्यावैं सनकादिक कवि कृपाहि गावैं नारद शारद शेष आदि सब कह [illegible] ब्रह्मा रूप सकल जग जाये पालन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विष्णुस्वरूप कहाये रुद्ररूप पुनि नाश करत तुम
नवगुण अगम पार नहिं पावे २ जिमि वर्षा सब
शसि उपजावत चंद्र शीत निज ताहि बढ़ावत सूर्य
जोति ते नाश करत तेहि त्रिगुण रूप तुम सब से न्या
रे ३ चारो वेद सदा गुण गावत गणपति आदि
सकल सुर ध्यावत करहु कृपा निज दास जानि के
देवसुवन मन तव पगु चारे ॥ ४॥

५७ राग मलार ताल तेताला

श्री काली छवि श्याम घटा लखि हरष प्रफुल्लि
त जन मन मोरवा गदामिनि दमक ध्यान दरशा
ये बरषा अमिय बंद सुख छाये योगी जन मन
मुदित जाहि में मगन रहत निशि दिन तजि पो
रवा १ वह बरषा ऋतु जब उर आये कलि ग्रीषम
के ताप नशाये नाना गुण शसि प्रगट होत हैं मि
टत अविद्या निशा जिमि भोरवा २ क्रोध लो
भ अरु मोह जवासा गलित भये सब एहि घन
चाशा देवसुवन के हिय नभ हरु है असु सदा
काली घन जोरवा ॥ ३॥

५८ राग मलार ताल तेताला

श्यामा सखिन हिंडोल झुलावत सखी ब्राह्म
आदि शक्ति सब देवन की मिलि गावत १ सुके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मलार गुंड अरु सोरठ राग रंग उपजावत सघन कुंज घन घोर मोर पिक दादुर शब्द सुबावत २ अति विचित्र हिंडोल शाल लखि ब्रह्म सुखहि बिसरावत देवसुवन शोभा समूह लखि जय जगदंब मनावत ३

५९ राग मलार ताल तेताला

श्यामा झूलत सरस हिंडोले शावन सघन कुंज की शोभा त्रिविधि पवन जहां डोले १ घन गरजत रव करत पपीहा मोर जोर धुनि बोले दादुर कीर कपोत कोकिला सारस हंस अमोले २ कुसुम अनेक भाँति बहु फूले अलि गरा करत कलोले देवसुवन श्यामा हिंडोल लखि थिर थहोत अलोल ३

६० राग ईमन ताल चौताला

ओंकार प्रथम मान शक्ति में काली प्रधान रुद्र मान महादेव वेद मान ब्रह्मा सिद्धि में गणेश मान तेजन मह सूर्य मान निशा माहिं इन्दु मान नृत्य मान रंभा १ तीरथ प्रयाग मान ऋषिन में नारद सुजान गान में सगीत मान नदी मान गंगा नर मेंन रेश मान असुरन में बलि प्रधान साज मान बीना कहत संत सज्जन संगा २ पुष्प मान पारिजात तरु में सुरद्रुम कहत दान मधि अन्न मान धर्म मान दया कहे सुरसुवन मान जिनने सब कला जान काली

Digitized by eGangotri

कल्याणी मान जगत जननि माया ॥ ३॥

६१ राग भैरवी ताल तेताला

कमला वंदत हौं पद द्वंद शुद्ध स्वरूप विपुव के मोहि-नी विष्णु प्रिया सुख कन्द १ क्षमा शील गुन मनि गंभीरि अति पति गति सुरनि अमन्द भक्त भवन में विभव दायिनी गावत यश श्रुति छन्द २ लोभ मो-ह मद क्रोध वर्जिता हरनि प्रमन को फन्द करहु कृ-पा मम हरहु सकल दुख याचत वर सुखनन्द ॥ ३॥

६२ राग काफी ताल तेताला

कमल पद सुमिरौं कल्याणी कमलासन को ब्रह्म प्रिया नारायिणि लक्ष्मी कमल पत्र तन भासनि-को १ कमल मुखी कर कमल विराजत कमल कोष मधि वासनि को २ कमल नेत्र पद विमल कमल से ध्यान करत अघ नाशनि को ३ कृष्ण चं-द्र के हृदय चंद्र दुति देनवारे सुख रासनि को देवसु-वन भनु सदा रैन दिन श्री वैकुण्ठ निवासनि को ॥ ४॥

६३ राग पूरवी ताल जल्द तेताला

भनु मन चरण कमल कमला के विष्णु लोक में म-हा लक्ष्मी कहत नाम श्रुति जाको १ इन्द्र लोक में स्वर्ग लक्ष्मी स्वाहा होम थल माहीं गृह लक्ष्मी गृह स्थ के घर में नाम जासु सुखदा वसुधा के २ जिन्ह

Digitized by eGangotri

बिनु नर आदर नहिं पावत हिन कुटुम्ब के माहीं देव
सुवन चितवत नाही पर पूजन करत सकल जगनाहीं॥३॥

६४ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

श्री देवी चरणारविन्द में मन मेरो अलि लागि रहोरे
जो देवेशि जगत के कारण हिरणगर्भ के कारण
धारण गदा चक्र अरु शंख कंज कर सदा हृदय हु
रि जागि रहोरे १ ब्रह्म रूप जो सब जग जाया अंड
कटाह अनेक उपाया ताहि ब्रह्म के पर स्वरूपेशी
जासु भक्ति सुभागि रहोरे २ माहेश्वरी सुमहा भा
गवति महाउदय माहामाया मति देवसुवन की वही
महा गति शरण भक्ति गुण पागि रहोरे ॥३॥

६५ राग झंझोटी ताल आड़ा तेताला

जगत जननि रानी हरि माया ब्रह्मा विष्णु महेश
सकल सुर सेवत तोहि अमित बल पाया १ करत
विधाता सृष्टि बिबिधि बिधि पालत बिष्णु सबहिं
करि दाया पुनि कल्पान्त माहिं शिव सहजहि कर
त नाश लहि शक्ति सहाया २ हे जननी जगदम्ब
अम्बिके देवसुवन तुव शरनहि आया करहु कृपा
मम हरहु सकल दुख करहु दया निधि भक्ति सहाया ३

६६ राग काफ़ी ताल तेताला

काम क्रोध मद लोभ छाड़ि के क्यों काली पद भजत न

नहींरे कल समुझाइतु समुझत नाही ऐसो जड़ अविचारगहीरे १ ज्यों माता अपने शिशुसुत को नहिं अपराध गनत मनहीरे त्यों तेरे अघक्षमाकरहिं गे कल्याणी करि कृपा सहीरे २ सेवत चरण कमल सनकादिक ब्रह्मादिक सुरगण सबहीरे देवसुवन अम्बा करुणामयि तुमहि देव नवनिधि घरहीरे।३।

६७ राग काफी ताल तेताला

योगीजन जाको ब्रह्मरूप करि लखत सदा वैष्णव विष्णु रूप करि ध्यावत कर लीन्हे नलजादि गदा १ शैव सदा शंकर करि ध्यावत कर त्रिशूल वाहन बलदा शाक्तशक्ति कहि ध्यावत जाको सिंह च-ढे नाशने बिपदा २ सौर सूर्य कर ध्यान करत जे-हि तन प्रकाशमय अलख सदा देवसुवन काली पांचो वपु ध्यानहरत यमराज फंदा ॥३॥

६८ राग काफी ताल जल्द तेताला

कालीनाम सदा नरमूरख रहत न क्यों रसना पर धारे कनक बरण मणि जटित अभूषण बसन छ-टा दामिनि दुति वारे १ नील जलद सम तन दुति कारी हृदय बिमल किन करत सहारे दुख दारिद सब भागि जाहिंगे नवनिधि सिधि बस होत तुम्हा-रे२ अमित जन्म के पाप न छोड़ें कैहैं आनन्द

Digitized by eGangotri

सब तव द्वारे देवसुवन सुत संपति बहु बिधि पा-
यो काली कृपा निहारे ॥ ३ ॥

६९ राग झंझोटी ताल तेताला

देवी द्वारे बाजत यंत्र पंच मन भायो पणाव नि-
षान भेरि सहनाई वीणा रबाब मृदंग सुहायो १
चंग उपंग हंग बहु बाजत नर अरु नारि जुड़ायो
जगमग होत ज्योति मन्दिर में देवसुवन लखि होत
अघायो ॥ २ ॥

७० राग भैरवी ताल जल्द तेताला

तव चरण कमल पर मन है भ्रमर लोभानो जै-
से चंद्र चकोर १ जिमि चातक स्वाती के बुन्द
से कमल भानु घन मोर २ अरु जिमि कुमुदि-
नि चाहति चंदहि चाहत चकई भोर ३ देवसुव-
न तव भक्ति चाहत दृढ़ देहु दया नीहि हिग कोर ४

७१ राग काफी ताल तेताला

श्री गंगा पद ध्यान करो मन तन के दुरित नशाई
विष्णु लोक से चली दयानी शंकर जटा समाई १
तहां ते चारि धार है निसरीं चारो नाम सुहाई सी-
ता चक्षु अलक नन्दा पुनि भद्रा सब सुखदाई
२ सीता केसर गिरि वर होकर गंध मादनहि
जाई पुनि भद्राश्व खंड पूरब है क्षीर सिंधु हि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

समाई ३ माल्यवान गिरि हो अति बेगहि केतुमाल महि छाई जो पश्चिम के जलधि माहिं मिलि चक्षु नाम श्रुति गाई ४ तिजो अलकनन्दा जेहि काहियत गिरि सुमेरु है धाई इसिरा दिशि हो नाघ त वज गिरि हेमकूट मन लाई ५ तहां ते भरत खंड पावन कारि सागसिंधु लहराई जासु स्नान चलत पग प्रति नर अश्वमेध फल पाई ६ भद्रा शृंगवान गिरि यहै भद्राश्ववर्ष महं आई देवसुवन त्रैलोक पावनि उत्तर जलधि समाई ॥७१॥

७२ राग काफ़ी ताल तेताला

श्री राधा पद पद्म ध्यान करु साम वेद जो लखायो है चम्पक स्वर्ण समान देह दुति शरद चंद्र मुख भायो है १ शरद कमल लोचन बिंबाधर अरु श्रोणी सुख छायो है नासा धि कुंद घंटिका राजे तिदन्त पंक्ति दुति पायो है २ गादि अग्नि अमर रेशमी तन प्रहसित वदन सुहायो है देवसुवन त्रैलोक स्वामिनी कृष्ण प्रिया यश गायो है ॥७२॥

७३ राग भैरवी ताल तेताला

हे राधे वृष भानु नन्दनी कृष्ण प्रिया गुण खानि सुनो जू १ तुम्हहिं छाड़ि गति और न मोको राखे पूर्ण मन शरन न गुनो जू २ कबहुं न दान धर्म कछु कीन्हे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नाहिं जप योग न ज्ञान सुनोज् ३ देवसुवन को य
ही भरोसा नाम गाइ तव अघहि भुनोज ॥४॥

७४ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

श्री राधा की श्रेष्ठ सहचरी सुरभी चरन मनावोरे प
रमेष्ठी लक्ष्मी स्वरूपिणी गोमाता गुन भायोरे १
अधिष्ठात्रि देवी गायों की गोमाता गुन गायोरे अ
ति पवित्रदा सब सुख देनी वेद टेरि के सुनायोरे २
घट अरु गाय भूमि के माहीं अगिन अंबुहि सु
हायोरे गो वन्धन थल श्यालि ग्राम में सुरनन्दन
जो मुनायोरे ॥३॥

७५ राग बिहाग ताल तेताला

सुरभी नाम सकल गो माता मोपर होहु प्रसन्न भ
वानी १ एक समय सब जगत माहिं जब गाय रही
नव व्यानी सब के छीर लीन्ह सुरभी हरि तब इन्द्रा
दिक पूजा ठानी २ षोडश भांति पूजि सुरगण मि
लि अरु अनेक अस्तुती बखानी देवसुवन तब सक
ल गाय थन मह नहि आई छीर प्रगटानी ॥३॥

७६ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

जैजै श्री मनसा देवी की जो कश्यप मानस से प्रग
टी सकल सुरासुर सेवी की १ जो भगवती सदा निज
मन में परब्रह्म ध्यावत क्षण क्षण में तासे नाम कहत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

मनसा करि ब्रह्म वेद अधि देवी को २ जो नर मनसा
पद मन धारे छूटि जात दुख होत सुखारे देवसुवन अ
रण मन न बिसारे चरण कमल हरि सेवी को ॥ ३॥

७७ राग नट

भजु मन कालिका शुभ नाम रटत जोहि सनका
दि हरि अज भये मंगल धाम २ सुरथ नृपति स
मापिरिपुडर गयो बन तजि ग्राम सुमिरि जाको नाम
पावन लहे सब मन काम २ अखिल ब्रह्मडकारइ स
व जग जननि अतनु अनाम अमित महिमा कहि
न सक श्रुति आदि सधि परिणाम ३ रटत रसना
नाम काली लहत नर बिश्राम देवनंदन शरण आ
ये द्रवहु शंकर बाम ॥४॥

७८ राग काफी ताल तेताला

मनसा होत प्रसन्न जाहि पर तासु सकल दुख छूटे १
श्वेत बरण चम्पक दुति दामिनि तनकी कांति लोभे
छबि लूटे २ देवसुवन मनसा प्रसाद तें दूहैं नेह जा
न पुनि जूटे ॥ ३॥

७९ राग काफी ताल तेताला

जो मंगल चंडी पद सेवत मंगल भवन होत नर सोई
सकल अमंगल मूल नसावत पावत सब सुख दुर्लभ
जोई १ जगत जननि जग मंगल करनी जिन्ह सरि अ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अवर न कोई ताके सर्व कामना पूरण देवसुवन सु-
मिरन सरण होई ॥ ४ ॥

८० राग खंभाच ताल तेताला

खरा मनावो षष्ठी को जहि सेवत सुख पावत नी-
के १ पुत्र पौत्र धन विविधि लहत नर पूरत सकल
कामना जीके २ देवसुवन षष्ठी प्रसन्न ते काटत
हलाहल काम अमीके ॥ ३ ॥

८१ राग खंभाच ताल तेताला

स्वधा नाम उच्चारण ते नर होत पवित्र पुराण बखानी
स्वधा नाम जगदम्ब अम्ब के भक्ति करत है जो प्राणी १
सकल तीर्थ अस्नान लहत फल अश्वमेध फल
पावत जानी २ स्वधा स्वधा पुनि स्वधा बार त्रय जो
निज रसना आनी तर्पण श्राद्ध बहुरि बलि के फल
देवसुवन पावत जग मानी ॥ ३ ॥

८२ राग ईमन ताल झपताला

जै जै आद्या भवानि जगत जननि विदित बानि भक्त
जनन्ह अभय दानि तू गुनेश्वरी १ जै ब्रजेन्द्र नन्दि-
नी अनन्त देव वन्दिनी प्रणत जनन्ह पारण दानि
जै महेश्वरी २ तेरोइ पद ध्यान धरत तेरोइ गुणगान
करत हरत अघ समूह मात जै विधेश्वरी ३ तेरो पद
शरण देवसुवन आये प्रणत दीजै निज भक्ति मातु जै ब्रजेश्वरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

८३ राग काफ़ी ताल तेताला जल्द क़व्वाली

बिनु काली पद भजन किये नर तन की तर निज जात क
भीरे जा पद को सेवत ब्रह्मादिक सनकादिक मुनि नि-
कर सभीरे १ जासु प्रसाद अखिल अघ सपने कात
न दाप जात नहि भीरे नाना बिधि सुख सम्पति छाव-
त देखु बिचारि जग बिदित अभीरे २ काली कल्मष
नाशनि कलि में वेद पुराण कहत सबहीरे देवसुवन
जो जपत रैन दिन तासु निकट दुख जात नहीरे ॥३॥

८४ राग काफ़ी ताल तेताला जल्द

जो मन बसै कालिका के पद सो बांछित फल तत्क्षण
पावै अधम उधारनि नाम जपत सब जो सुमिरे अ-
घ नाशि नशावै १ तुम उदार दानी सबही विधि वेद
पुराण संत सुर गावै देवसुवन को यह बरदीजै अ-
चल भक्ति तुव चरणन पावै ॥२॥

८५ राग काफ़ी ताल तेताला जल्द

श्री काली के नाम लिये नर छूटि जात भव बाधन से
मंगल मूल अमंगल हरनी बाम करनि यम शासन
से १ अमित अपार नाम की महिमा वेद कहत नहि
त्रासन से ताको नहिं त्यागो निज उर से डरो नहीं जग
अपमान से २ जो कछु मिलै अन्नजल लैके स्वाद ही
न बसु धासन से देवसुवन कालिहि समर्पि के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करो भोग निज यासन से ।।३।।

८६ राग ईमन ताल जल्द तेताला

जगदंबा जग जननि भवानी कल्याणी पद कमल
भजोरे मधुकैटभ बधि करि दुख जग के नाना भांति
हि विभव सजोरे १ देवेश्वरी विश्वेश्वरि विमला अ-
मल चरण खरिख कमल लजोरे वाके ध्यान करो मन
मूरख अपर सकल सुर आशु तजोरे २ जो निज कर्म
अकर्म पाछिलो करि विचारि मन माहिं लजोरे सु-
रनन्दन काली करुणामयि निशवासर करि ध्यान भजोरे ३

८७ राग झंझोटी ताल तेताला जल्द

मन मेरो काली पद जकरी आनन्दिन आनन्द दा-
यिनी क्षण न तजो हारिल जिमि लकरी १ कबनि-
हु काल दुकाल न व्यापिहि नहि यम गण पकरी
कबहुं न दुख दारिद जगदंतर पीसहि ताहि नाहिं
आचकरी २ रहत सदा आनन्द मगन मन धरत न
कबहुं मोह मग मकरी देवसुदन निशु वासर क्षण
क्षण रहो सदा काली पद पकरी ।।३।।

८८ राग चर्चरीक ताल झपताला

जय जय जगदंब अम्ब जननि शम्भु दल कदंब दलनि
असुर कुल समस्त प्रभु भामिनी १ आदि पूर्णि-
तू भवानि आदि प्रकृति श्रुति बखानि भक्ति मुक्ति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दायिनी त्रिलोक स्वामिनी २ करुणा अर्णत् विधाबि सकल भुवन विभव दात्रि जपत नाम सदा देव दिवस यामिनी ३ तेरो पद ध्यान करत विविधि भांति पाप हरत टरत त्रिविधि ताप सुमिरि अमित नामिनी ४ देवसुवन दास तोर विनवो निज कृपा कोर मेटहु दुख द्वंद मोर ब्रह्म धामिनी ॥ ५॥

८९ राग काफी ताल सेताला

हे दुर्गे जगदम्ब अम्बिके कल्याणी मम अर्ज सु- नोजू तू गायित्री वेद तत्व तू सत चित्त मयि मन अ- मल तु जो जू १ नहिं तप जप नहिं ज्ञान ध्यान रत न- हिं कछु जाग न अनल हुनोजू नहिं तीरथ व्रत नि- यम विविधि विधि नहिं उपवास न तत्व लुनोजू २ केवल एक नाम काली अस राखि हृदय मन म- गन गुनोजू देवसुवन याचत दिन प्रति तव चरण कमल रज प्रीति दुनोजू ॥ ३॥

९० राग दरबारी कान्हड़ा ताल चौताला

दुर्गे देवि दुर्गति हरणि अमित सुख की दानि तुम संसार सागर तरणि १ अखिल जग को सृजति पाल ति प्रलय अद्भुत करनि अति अपार विचित्र तुव गु- ण जान नहिं कछु बरनि २ विबुध गण के हृदय अंतर वृद्धि होत् रजणि मातु तव पद सेवि जन को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

 لا ١٨٩٧ جون

सकलदारिद्दरनि ३ रामकाम सुधारि पूरणि रा-
ज्यसकलहरणि नारदादि अनन्ततव गुण कहि सक-
हिंनहिं बरणि ४ जगतजननी बिपतिहननी सदा
अशरनशरनि देवसुतकोकामपूरण शीघ्र कुरु
वर बरणि ॥ ५ ॥

९२ रागकाफ़ी तालजल्दतेताला के वाली

दुर्गादेवी को आस गहो नरबौरेरे क्या जग झूठ स्व
प्न के माहीं सदा असार सार जेहिं नाहीं मोह पास १
निजकरठ लगाये माया जाल माहिं लपटाये निषि
बासर बिन धीर न पावत फिरत श्वान से दौरेरे २ जा
देवी पद देव समेता देवराज सेवत चितचेता अलख
अनीह रूप विधि ध्याये सकल सिद्धि पदवी को पाये
ऐसो चरण कामतरु तजि के क्या धावत पर पौरेरे २
मन दृढ़ करि हिय ध्यान लगावो छल परपंच सकल
बिसरावो रसना ह्वो नाम को धारे कहो याहि से आश
तिहारे तुम तजि अपर देव नहिं राखो फिरौ नहीं रस
जोरेरे ३ जगजननी सुनि ऐसी बानी द्रवहिं बेगि क-
करुणा की खानी जन के सर्व दोष बिसराये भक्ति ता
सु गृह नवनिधि लाये देवसुवन सुर दुर्लभ जो पद लहत भ
क्त भलि तौरेरे ॥ ४ ॥

९३ राग काफी ताल जल्द तेताला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्री काली पद कमल अमल में बसहु भ्रमर मन मेरारे १ जाके पद रज सेवि जनन को छूटत शमन दरेरारे २ जग के सुख तम निशि सपना में सोवत जागु सवेरारे ३ काहे को तुम दुख पावोगे नाहक दुष्ट तरेरारे ४ देव सुवनकाली मन रे भजु पैहसि बिभव घनेरारे ॥५॥

९३ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

श्री दुर्गा दुर्गा भज मूरख क्या जग जन्म गवांवसिरे दुर्गा नाम हरत दुर्गति को कबहुं न ख्याल बिसरावसिरे १ बालापन कियो गार तरुणाई बीते का पछितावसिरे अबहूं पन चौथे महं चेतो अमित भांति सुख पावसिरे २ नहिं जप तप व्रत नियम होम मख नहिं विराग उपजावसिरे देवसुवन दुर्गा दुर्गा रटि सुमें मेद्ध कहा वसिरे ॥३॥

९४ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

जगजननी पद कमल मनाये पाइ कृपा उर अंतर तुरतही सर्व शास्त्र विद नाम कहाये १ जासु नाम महिमा अपार श्रुति परत कलेश न पाये ऐसो नाम धारि रसना पै बिनु श्रम सकल बिभो गृह पाये २ काहे को नर पीर उठावत शिर भ्रम भार चढ़ाये क्यों न लेत धन मांगि माय से सकल सिद्धि जसु दास सदा ये ३ शिव सनकादि आदि सुर सुरपति कालिहि सेइ अघाये देवसुवन कालिनाम कामतरु जपत मात्र सुख छाये ॥४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

९५ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

मोको आस तुम्हारि दयानी नहिं जप तप नहिं दान तीर्थ ब्रत ज्ञान ध्यान नहिं जानी १ नहिं विराग नहिं योग युक्ति कछु नहिं बिनीत स्दु बानी नहिं मत संग न धर्म कर्म रत नहिं पोषण परप्रानी २ शुद्धि अशुद्धि विवेक न जानो नहिं सज्जन नहिं ज्ञानी केवल नाम कालिका जपिके सकल सिद्धि लहि भे सुखखानी ३ सब शुभ भोग लोग सुत सम्पति विविधि विभव रजधानी देवभुवन बिन साधन सब सुख पायो कृपा भवानी

९६ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

सकल देव सेवन काली पद होत सुख दुख पुंजन घाई शुभ निशुंभ आदि खल गन जत देवन हेसु हतो रणजाई १ रामचंद्र के काज संवारेव बिजय लंक पुर पाई कमल योनि को हरयो प्रथम दुख मधुकैट भहि बधाई २ देवराज जब ऋषै पाप लहि भरण देवि गुहराई सकल छिद्र तन भयो नेत्र शुभ पाप पाप बिनशाई ३ वेद पुराण बखानत गुण को शारद रटत सदाई मोपर होहु प्रसन्न भवानी देवसुवन बलिजाई ॥४॥

९७ राग ईमन ताल जल्द तेताला

मन मेरो काली अनुरागो लोभ मोह निशि अति अपार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तम क्या सोवत किन जागो १ काम क्रोध मद आदि बासना बिबिध भांति के त्यागो नाम अधार राखि उर अंतर सत संगति महं लागो २ नहिं धन धाम धाम सुत सम्पति कल्याणी प्रति मांगो रहो मगन निशि बासर मन में रवाई अन्न बरु पागो ३ अष्ट सिद्धि नवनिधि सकल सुख खान पान बरु पागो देव-सुवन सब भवन भरहिंगे कृपा कालिका पागो ॥४॥

९७ राग ईमन ताल जल्द तेताला

जग तारनि तारा पद ध्यायो तारा नाम जपत सनकादिक अजर अमर पद अनुपम पायो १ नारद शिव चतुरानन सेवत सकल सिद्ध मुनि ध्यान लगायो २ नाम प्रसाद पाय अभि बांछित वेद पुराणन्ह प्रगट लखायो ३ विप्र धेनु सुर भूमि भार दुख जब दशकंधर आदि सतायो ४ तारा राम रूप कोशल पुर दशरथ राज किशोर कहायो ५ प्रथम ताड़का हनि सुबाहु सह अरु मारीच भगायो ६ गाधि सुवन करि सकल काट्यो ऋषि तिय स्वर्गहिं धाम पठायो ७ भंजि धनुष मानिन्ह मद खंड्यो कीरति बिमल लोक तिहुं छायो ८ देवसुवन जाके गुण गावत कलिकलुष तन दहन न पायो ॥९॥

९८ राग ईमन ताल जल्द तेताला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भवानी तारनी तारा भई सुरहेतु बनबासी हनो खल वृंद को बन में कियो नरचरित नये स्वामी १ सुजन सुग्रीव दुख मेटो बँधायो सेतु जलरामी २ बहुरि संग्राम करि लंका सकल दशकंध बल नाशी ३ बहुरि फिरि आय रजधानी बिबिधि महि धर्म परकाशी ४ कहे सुरसुवन गुण गाये हरत यमराज की फांशी ॥५॥

१०० राग ईमन ताल जल्द तेताला

जगत जननि दानी शिव जाया होहु प्रसन्न हानि १ भारत को विश्व पूवरि महि माया १ विश्वेशी सब विश्व पालिनी तुमही विश्व उपाया भूमि रूप तुम सब के आश्रय सकल विश्व पर दाया २ जल स्वरूप रसरूप धातु है सकल भूमि परछाया जलथल बन गिरि सरि सरिता पति सकल बसहिं तव काया ३ मोह लोभ छल स्वापिवास तन पापिन्ह घर कहलाया देवसुवन लक्ष्मी सुकृतिन्ह घर बसनी पुराण हू गाया ॥४॥

१०१ राग ईमन ताल जल्द तेताला

भजु मन तुलसी नाम सुहाये जो जग माहिं निरंतर पूजित ताते जग पूजिता कहाये १ तुलसी वृक्ष सेइ जे जग में ताके पाप पहार नशाये जेहि आँगन में शोभित तुलसी ता घर कबहुं दरिद्र न जाये २ जिन्ह बिनु अमित भांति पूजा नित किये विष्णु संतुष्ट न पाये केवल जल

Digitized by eGangotri
२१७८ سجن

तुलसीदल दीन्हे द्रवत भक्त उर मब सुख छाये ३ जो तुलसीके वारि अंग निज छीरि देत नर प्रीति अनवाये देवी सुवन सो अनघ होत है मानो तीर्थ समस्त नहाये ॥४॥

१०२ रा० यमन ताल जल्द तेताला

सुरगण सों सेवित पद जाके १ ओंकार प्रोक्त सारदा अनुकूल कहत महातम विधिवत गाके २ तुलसी सेइ सकल वांछित फल होत सिद्धि नर कहं बिनु थाके ३ जा पर करत कृपा करुणा मयि हेत सकल सुख जत वसुधा के ४ देवसुवन तुलसी बिनु सेवे मिलत न कृष्ण भक्ति सुख का के ॥५॥

१०३ रा० काफ़ी ताल जल्द तेताला

शैलकुमारी तव गति न्यारी अब सुधि लीजे हे हमारी नहिं जप तप नहिं ज्ञान ध्यान कछु नहिं तीरथ ब्रत नियम संवारी १ शुद्धि अशुद्धि विवेक न जानो नहिं जानो श्रुति तत्व तुम्हारी केवल आश्रु नाम के तेरो हम पांवर तुम तारन वारी २ पतित उधारन नाम ख्यात जग जो यह सत्य कथित श्रुति चारी तो सुरनन्दन के दुख मेटो करुणा सागर शंभु पियारी ॥३॥

१०४ रा० काफ़ी ताल जल्द तेताला

हरहु सकल भव ताप संतारनि देवन पालि दनुज रद्र करि कियो शुंभ मंथ जनन हितकारिणि १ दीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दयानी दुरित दारिद्यद्युति देति दुरापनिज हित जन पालिनि दुष्ट प्रचंड खलप्रहारिणि सुरसंत सुधारनि जग यश्कारिनि २ कंज सुचारु चरण मौलि बर सुधाकर धारिणि ऋग रिपु वाहिनि मागत भक्ति चरण कंज महँ सदा तव देहु सुरसुवन तारिणि ३

१०५ राग वसन्त ताल जल्द तेताला

चेतहु चित काली चरण कंज आनन्द कन्द मुद मंजु पुंज चपला सुचंद्र द्युति चोर चुंचु विधि विविधि चिन्न करि सदन संचु अज्ञान घन तम प्रकाश भानु दुख विपिनि दहन समुदित कृशानु १ हरिहर विरंचि हृदय वलित धाम सुर असुर मनुज कृत प्रात प्रणाम भव दुर्ग जलधि कृत सुगम पार वर तरणि वेद विधि विहित सार २ शुचि वरण चारु सुखमा आगार हत दुराचार महिमा अपार अणिमादि सिद्धि नव निधि निदान सुरराज मुकुट चित अति प्रधान ३ द्विज कुल कमल राज के दिवाकर निज जन कुमुद समुदित निशाकर याचत न्रपति कुल देव नन्दन बसत हृदय मम सुताप कंदन ॥४॥

१०६ राग काफी चैत ताल जल्द तेताला

दुर्गा दयानी देवी दुर्गा तिहरु मेरी भवानी १ बलि होम मंगल पूजा करि हो जगदानी शिवानी २ कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देवी कंचन चुरिया कुण्डल दोनो कान म्हड़ानी ३ शिर सोनाके छत्र चढ़ै है। गल मुक्ता के हार मयानी ४ कर जोरि सुत नन्दन जाये निज पद रुचि देहु प्रभानी ॥५॥

१-७ राग दरबारी ताल झपताल।

श्री कालि कंज सुचारु रुचि शुचि चरण भजु मन कामदम् कलि कोटि कल्मष भंग करि जग कुंज भगु विश्रामदम् १ सौभाग्य बहुविधि करण पटुतर चित्त ताप प्रणामदम् विधु कोटि किरण तुलित नख रुचि सेवि कवि पद धामदम् २ बुध विबुध सेवित निगम गीत सुभीत भंजन भावदम ब्रह्मादि हृदय सुधाम धृत विज्ञान बर अभिराम दम ३ कर फलित नन्दय कुल देवनन्दन पठन्ति विनय विराग दम मम हृदय पंकज बसत निशि दिन विमल विदित सुभाग्यदम् ॥४॥

१-८

नीचे प्रकार से अध्याय सम भजना चाहिये अरु पूर्ण अध्याय का अर्थ खुलासा तौर से यानी अध्याय का मतलब भाषा किया गया है

भजन संक्षेप दुर्गा राग झिंझोटी ताल जल्द तेताल

मार्कण्डे मुनि पण्डित ज्ञानी - द्विज सो बोले गहरद वानी भाव धरि जोर विप्र प्रिय नन्दन देवी किया अथ मनु चन्दन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

तिनकी कथा सुनो द्विज मण्डन सुरथ नरेश भयो
खलखण्डन रिपुके प्रबल पराक्रम ताकी चलेबि
पिनिदय चढ़े एकाकी सो गय मेधा मुनि के आश्रम
पूछेव माया चरित पराक्रम मुनि कहि माया त्रिभुव-
न पाली विधिहित जल महं प्रगटे काली हरिहि प्र-
बोधि प्रथम विधि पाली मधुकैटभ हनयो हिमवा-
ली अ॰१ देवासुर रण दैत्य पराजित सुर सब गय
विधिसहित सुकाजित हरिहर सो विनयो बहु भांती
केहि विधि रहों विबस दिन राती सब सुर कोपि घटोर
तेजबल कमला प्रगट हेतु बध खल दल क्षण म-
हं छेदि असुर दल हरणी सुरको सुखित कीन्ह शुभकरणी
अ॰२ गरजि कोपि महिषासुर धायो मारि सकल
सुर दल बिचलायो तब कोपी सुर यूथ सयाना कुंभ
सहस भरि मद करि पाना चढ़ि दबाइ पद पटकि ध-
रणि तल पूल सँभारि खल हनी बीच गल्ल हाहा
करत असुर दल भाजे सुमन वृष्टि करि सुरदल राजे
अ॰३ शक्र आदि किय देवी बन्दन। जब देवी करि अ-
सुर निकन्दन तुम जग कारिणि पालिनि हारिणि
दैत्य बिदारिणि देव सुधारिणि बरणि प्रताप लहो कि-
मि पारा हरिहर आदि सकल सुर हारा यहि विधि
सुनि अस्तुति शुभवानी वरदै अंतरहित रुद्राणी पुनि

Digitized by eGangotri

प्रसाद बखौं महराजा जगदम्बा के कृत सुरकाजा
अ·४ सानुज शुंभ भयो अभिमानी बलसे कीन्ह
सब सुर के हानी शुंभ निशुंभ पराजित सुरगरा ग-
य सब मिलि हिमगिरिहित स्तरा हरि माया की चरि
त बखानी सगी हो प्रगटी शिवरानी तिनकी ख-
ल सुनि सुन्दरताई तेहि आवन कहं दूत पठाई च-
राड मुराड कहं पुनि खल पठवा आनहु शुंभ गर्भी
लकुल प्रभवा ताकहं उत्तर दीन्ह भवानी कहियो
खल सों यह मम बानी हम प्रगा कठिन कौन
मति भोरी जो रण मम सम सो पति मोरी ॥
अ·५ तब धूम्राक्षहि कह्यो सुरारी आनहु वेगि ता-
हि बहु मारी सो जा कहा गिरा धुमलोचन चल
नहिं तो करिहौं मदमोचन सुनि खल बचन कोप
करि माया करि तेहि भस्म कीन्ह सुर दाया
अ·६ आयो चराड मुराड दल साजो भइ प्रचराड
काली रण छाजी क्षण महं खंड मुदराड दनुज द-
ल खंडि चराड पुनि मुराड प्रबल खल सुरपा-
लिनि जग तारिणि माता चामुराडा भइ त्रिभुवन ख्याता
अ·७ चराड आदि गण घात निरखि रण आये को-
पि शुंभ बल तन क्षण छादिन किये चराडका
गण को सहित सिंह काली दल जन को ब्रह्मादिक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की शक्ति सयानी करि सुरारि बध हेतु पयानी
आयो तहं दुष्ट खल भट मानी गाजित रक्तबीज रण
ठानी एक बिन्दु तिहि रक्त पतन से जनित कोटि भ
ट तन सम रण से रुधिर प्रभव भट दैत्य चबाई
चामुण्डा पित रक्त सुखाई रक्त बिहीन असुर
कहं काली पटकि धरणि तल शूलन घाली
अ० ८ यह बिचित्र सुनि कथा नरेशू पुनि पूछे मु-
निसे संदेशू रक्तबीज बध सुनि शुंभासुर सानुज
कहो कयो का आतुर कह मुनि शुंभ सबल र-
ण आयो तहं निशुंभ कर शूल चलायो सहित
शूल खल को पर चारि खड्ग छेदि शिर धरणि पछारि
अ० ९ निहत निशुंभ निरखि अति कोपा शुंभ सब
न शर से दल तोपा करि नभ प्रथम असुर रण भा-
रे मुनिगण मन कहं विस्मयकारी देव दनुज कुल
न्दपहि पलनि में हनि उर शूल निपाति धरणि में शुंभ
निपात निरखि सब सुरगण बरषि सुमन हर्षित भे तन मन
अ० १० देवी हत किय सुर आराती बिनय कीन सुर
गण बहु भांती जग कारिणि पालिनि संहारिणि नारा-
यणि सब रूप प्रचारिणि यहि विधि अस्तुति सुनि
शुभवानी देइ बर सुरगण को रुद्रानी जब जब असु
रन्हि सुर हानी तब तब नाश करौं रिपु खानी —

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अ·११ यह अस्तुति करि हैं जो मेरी बाधा आमित हों
जनकेरी शान्ति पाठ यह सदा सुहाई रिपु छय कार
ण मंगल दाई सकल कुब्रत्त पराभव कारक पाठ
नसे भूतादिक हारक यह मम चरित सुनै जो कानन
सो जग रहै यथा पंचानन यह कहि दृष्टि अगोचर
माया भई देखत देवन शिव जाया साकाली सब
जग जन पाली पूजन ते नर दुख गण घाली —
अ·१२ न्टप यह चरित कहा देवी को इमि प्रभाव
भारति जगती को सुनि के वचन सुरथ न्टप बरमुनि
सहित समीर सू क्रु जापि बहु पुनि निराहार न्टप बै
श्यविजित मन मूर्त्तिरची महो मय शुभनन धूपदी
प बलि दान बिबिधि करि निज तन रुधिर दियो सो
हसधरि इहि बिधि पूजन पाय भवानी बोली प्रगट
भक्तजन जानी तू बरवैश्य होहु बुध ज्ञानी बहुरि रा
ज्य तव न्टप रिपु हानी यहि बिधि द्विज वर पाय न्टप
ति बर होई है सावर्णि बुध मनु बर जगदम्बा यश भाव
बन्दन कियो धरनि सुर न्टप सुर नन्दन अ·१३

१·६ कबित्त

दुर्गाजी प्रसन्न हेतु अस्तुति अनेक ग्रंथ गीत औ क
वित्त वेद बहु बिधि प्रमाणो है जाने बहु माने प्रधाने
पै पुराने कबिता में बहु देवन का सेवन बिधाने है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

याते छिति कोविद कवीन्द्र धीर सम्पति लहि रचौ
शुभ गीत यामें देवी गुण गाने हैं देवीजनजीवन
की यंत्र जानि जाहिर करि नृप कुल विख्यात देव
नन्दन बखाने हैं १ बासर गुण अंक चन्द्र युक्त शो
भसकृत दूय मास ग्रीष्म वार मेल विजया तिथि के
तुके परी है समाप्ति पर बुधजन सो विनय मेरी गो
त दोष पोथि पढ़ै राखै मम हेतु के मुन्शी मनोहर
विविध विद्या विवेकधूर नवल किशोर पास पठये
याही हेतु के मुद्रित करि दिशानि में करैंगे प्रचार
याके गुनगन यथा गान करें कविजन नित हेतु के २

इति श्री भजनमाला समाप्तिः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE